उत्पत्ति हुई। जो सुख हमें मिला है, उसे सबको देने का धर्म का भाव पैदा हुआ। बाद में धर्म को धार्मिकता से जोड़ दिया गया। धर्म का संबंध पूजा-पाठ से नहीं है। धर्म लोगों को आपस में जोड़ने का काम करता है। इसमें सारा जीवन निहित है। ज़्या हिन्दू धर्म की कोई किताब है? ज़्या हिन्दू धर्म की कोई आचार संहिता है? ऐसा कुछ भी नहीं है। धर्म का पर्याय है शरीर, मन, बुद्धि के बीच समन्वय बनाना। इसमें शरीर और मन के सुख में विभेद नहीं रह जाता। सबका सुख निहित है। धर्म का अनुशासन है, जिसे सबको मानना पड़ता है। पत्नी का पति के प्रति किया गया पहला व्यवहार धर्म है। माता-पिता की देखभाल धर्म है। धर्म में कर्तव्य पालन होता है। मनुष्य के धर्म के अनुशासन में रहने की बहुत पुरानी व्यवस्था है। धर्म तत्व भारत की सारी व्यवस्थाओं का सारे विचारों का आधार है। व्यज़्ति धर्म यानी कर्तव्य पालन के लिए अपना बलिदान देने में भी पीछे नहीं रहता। धर्म में व्यज़्ति, परिवार, समाज फिर राष्ट्र सबका विकास साथ होता है। इसमें किसी को दबाना नहीं पड़ता। इसलिए धर्म में खुद की वजाय दूसरे के विकास की चिंता रहती है। ज़्योंकि मनुष्य जानता है कि दूसरे के विकास में उसका विकास भी निहित है।

इस समय देश में सबका साथ, सबका विकास की बात कही जा रही है। वास्तव में वह धर्म का हिस्सा है। भारत के लोगों में आक्रमण का स्वभाव नहीं है, इसलिए यहां सबका साथ, सबका विकास की बात चल सकती है। लेकिन, यह हुआ है इसे कैसे मानेंगे? उसकी कसौटी है, सबका विकास करते समय सबसे अंतिम व्यज़्ति को विकास का लाभ हो यह भाव होना चाहिए। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानव दर्शन में उसी अन्त्योदय की बात कही गई है। महात्मा गांधीजी ने भी इसी कसौटी की बात कही है। यह प्रश्न मन में दुविधा उत्पन्न करता है। इसे करना चाहिए या नहीं करना चाहिए। गांधीजी और पंडितजी ने कहा कि आंख बंद करके यह काम करना चाहिए। दो अलग-अलग